Chapter-1

अध्याय : १ :

ललित निबंध - परिभाषा और स्वरूप

गद्य विधा का एक रूप-निबंध

साहित्य अपनी युगीन प्रतिक्रियाओं और संवेदनाओं का लिखित रूप है। कोई भी विधा अपने युग का प्रतिनिधिस्वरूप प्रस्तुत करती है। वैसे संसार में साहित्य का प्रथम रूप पद्य ही रहा। क्योंकि पद्य मानव की सहजता और स्मृति पकड़ के अधिक निकट होता है। हिंदी गद्य के पूर्व प्राय: समस्त रचनाएं पद्य में हुआ करती थी। पद्य की अपेक्षा गद्य की रचना महत्वपूर्ण समझी जाती है। वह इसीलिए कि पद्य की अपेक्षा गद्य की रचना कठिन होती है। तभी तो 'गद्य कवीनां निकषं वदन्ति' कहकर गद्य को कवियों की कसौटी माना गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है - 'निबंध गद्य की कसौटी है' कहने का तात्पर्य यह कि निबंध तो कसौटी की भी कसौटी है। हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। फिर निबन्ध तो उसका और भी विकसित स्वरूप है। अत: वह और भी नवीन विधा है। यह निश्चित है कि बहुत पहले यदि हमें कुछ लक्षण राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद, लल्लूलाल या सदल मिश्र में मिलते हैं, तो उन्हें निबंध की संज्ञा से अभिहित नहीं किया जा सकता। उनमें गद्य का रूप हो सकता है। किन्तु निबंध के स्वरूप की स्थापना नहीं।

कुछ विद्वानों ने पं० सदासुखलाल के 'सुरासुर निर्णय' को प्रथम निबंध माना है। इसीलिए पं० सदासुखलाल जी प्रथम निबंधकार माने जाते हैं। इनकी भाषा गद्य का तत्कालीन स्वरूप अवश्य प्रस्तुत करती है जो पंडिताऊपन से बोझिल है। इसके बाद काफी अरसे तक निबंध जैसी कोई रचना सामने नहीं आई। निबंध के कुछ लक्षण स्वामी दयानन्द सरस्वती और श्रद्धाराम फुल्लौरी के लेखों में मिलते हैं। कुछ लोग तो यहीं से निबंध का प्रादुर्भाव मानते हैं। स्वामी जी से पूर्व ईसाईयों का प्रचार जोरों पर था, वे अपने शिक्षा के प्रचार-प्रसार तथा भारतीय रीति-रिवाज आदि को निकृष्ट बनाने के लिए भरसक प्रयास कर रहे थे। स्वामी जी ने अपने लेखों में उनका सही निराकरण किया। ईसाइयों के गलत प्रचार का खंडन और भारतीयता का मंडन किया।

उन्होंने अपने लेखों में जातिधर्म आदि कई बातों पर अपने विचारों को प्रकाशित किया। अत: उनके आपसी आरोप-प्रत्यारोप निबंधों के रूप में पाठकों के सामने आते रहे। उसी समय राष्ट्रीयता की आग भड़की और तमाम स्थानों से सम्बंधित लेख पाठकों को मिलने लगे। भारतेन्दुकाल तक राष्ट्रीयता की भावना ने अपना तीव्र रूप धारण कर लिया था। भारतेन्दु जी के पूर्व तक जो भी लिखा जाता रहा है वह उस कोटि का नहीं था। साहित्य के लिए भारतेन्दु जी वरदान सिद्ध हुए।

प्रारंभ में गद्य साहित्य कथात्मक ही रहा। लेखक पाठकों की रुचि से ठीक प्रकार से परिचित भी नहीं हो पाते थे। धीरे-धीरे पत्र-पत्रिकाओं की सुविधा उपलब्ध होने पर एक दूसरे के विचार-सन्देश उनमें छपने लगे। लेखकों में यह भावना भर गई कि अब जो कुछ भी सामने लाया जाये वह बड़ा सुसज्जित और आकर्षक होना चाहिए। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के शब्दों में भावों और विचारों की प्रधानता तथा शैली की रमणीयता के योग से जिस नवीन साहित्य का प्रचलन हुआ, उसे ही निबंध साहित्य की संज्ञा प्रदान की गई।[१] भारतेन्दु युग हिन्दी गद्य की जागृति का युग था। गद्य के पूर्व पूरा साहित्य पद्यमय था, परन्तु इस युग तक आते- आते परिस्थितियों में ऐसा परिवर्तन हुआ कि गद्य के विकसित रूप के साथ निबंध की प्रमुख रूप से स्थापना हुई।

इस गद्य प्रधान आधुनिक काल में गद्य को लेकर साहित्य रचना का जो अंग विशेषरूप से परिपुष्ट, गुण-समन्वित तथा व्यापक बना और बनता चल रहा है उसका नाम है निबंध। अपनी अनेकरूपता के कारण वह वर्तमान साहित्य विधा के क्षेत्र में अनेक दिशाओं में प्रसरित दृष्टिगत होता है। निबंध की व्यापकता का कारण उसकी बहुरूपता के अतिरिक्त उसकी अनेकरूपता भी है। अभिप्राय यह है कि निबंध अपनी बहुरूपता, अनेक प्रकारता और गुण संन्निविष्टता के कारण आधुनिक काल के साहित्य पर उत्तरोत्तर छाता चला जा रहा है।

<u>निबंध शब्द का अर्थ :</u>

निबंध हिन्दी का तत्सम् शब्द है । संस्कृत की मूलधातु `बंध` में `नि` उपसर्ग (नि+बंध) लगाकर दो अलग-अलग प्रत्ययों के योग से दो पृथक-पृथक व्युत्पत्तियां मानी गई है । वाचस्पति के अनुसार नि+बंध+घञ् से निश्चिताधीन विषयम् अधिकृत्य बंधनम् अर्थात् निश्चित रूप से किसी विषय पर विचारों की श्रृंखला बांधना, रोकना, संग्रह करना आदि । म जटाधर के अनुसार नि+ बन्ध +अच् से नीम का वृक्ष और उसके सेवन से कुष्ठ रोग का निरोध होता है । किन्तु शब्दों के व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ ही सदा प्रयोग में नहीं आते । कालांतर में उनके अर्थ में विस्तार या संकोच स्वाभाविक-रूप से होता रहता है । कोषग्रंथों में दिए गए और आधुनिक युग में अर्थ विशेष में निबंध शब्द के प्रयोग इसके प्रमाण हैं । श्री वामन शिवराम ~~अर्थ~~ आप्टे द्वारा रचित संस्कृत शब्दकोष में निबंध शब्द के निम्नलिखित बारह अर्थ दिए गए हैं (१) बांधना, जोड़ना(२) लगाव-आसक्ति(३) रचना, लिखना(४) कोई साहित्यिक टीका या कृति (५) संग्रह (६) संयम, बाधा, रोक(७) मूत्रावरोध(८) श्रृंखला (६) संपत्ति का दान, पशुओं का युद्ध या द्रव्य का भाग किसी भी सहायता के लिए बांध देना(१०) निश्चित-घन(११) नींव, उत्पत्ति(१२) कारण-हेतु । उनके अनुसार नि +बंध + निबध्यते अस्मिन इति अधिकरणे निबन्धनम् । जिसमें विचार बांधा अथवा गूंथा जाता है ऐसी रचना । संस्कृत साहित्य में व्यवहृत निबंध शब्द पर विचार करते हुए आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है `प्राचीन संस्कृत साहित्य में निबंध नाम का एक अलग साहित्यांग है । इन निबंधों में धर्मशास्त्रीय सिद्धान्त की विवेचना का ढंग यह है कि पहले पूर्वपक्ष में बहुत से प्रमाण उपस्थित किए जाते हैं, जो लेखक के अभीष्ट सिद्धान्त के प्रतिकूल पड़ते हैं । पूर्व पक्षवाली इन शंकाओं का एक-एक करके आरंपक्ष में जवाब दिया जाता है । सभी शंकाओं का समाधान हो जाने के बाद आरपक्ष के सिद्धान्त की पुष्टि में कुछ और प्रमाणों का निबंध होता है इसीलिये उन्हें निबंध कहते हैं ।[२] हिन्दी में निबंध शब्द का प्रयोग एक ओर तो `एस्से` के पर्याय के रूप में ललित या व्यक्तिगत निबंधों के लिए होता है और दूसरी ओर उन रचनाओं के लिए भी होता है जिनमें

किसी विषय का सुसम्बन्ध विवेचन प्रस्तुत किया जाता है।[3] डबल्यू बेसिल वर्सफील्ड के मतानुसार निबंध से तात्पर्य ऐसी रचना से है जिसमें लेखक विचारपरंपरा के साथ बहुत कुछ अपने भावों और मनोवृत्तियों को भी निराले ढंग से व्यक्त करता चलता है। वर्सफील्ड ने ऐसे और ट्रीटाइज आर थीसिसि में भेद बतलाते हुए लिखा है कि - निबंध का प्रबंध से वही सम्बंध है जो रेखाचित्र का पूर्ण चित्र से सम्बंध है। निबंध में गुण और स्वरूप भी वही होते हैं जो किसी प्राकृतिक स्थल के रेखाचित्र में। लेखक निबंध में अपने उन भावों का समावेश करता है जो किसी वस्तुस्थिति का अध्ययन करने से उसके मस्तिष्क पर पड़ते हैं।[4] श्री वामन शिवराम आप्टे ने अपने अंग्रेजी-संस्कृत कोष में 'ट्रीटाइज' और थीसिस शब्दों के लिए निबंध और प्रबंध दोनों शब्द दिए हैं।[5] भाषाशास्त्र के अनुसार निबंध के अर्थ विस्तार का क्रम इस प्रकार है- निबंध शब्द का मूल वाच्यार्थ है- संवार कर सीना - जो कि आरंभ में ग्रंथों के सीने के अर्थ तक ही सीमित रहा। यह शब्द उस ग्रंथ के लिए प्रयुक्त होने लगा जिसमें किसी विषय के सम्बंध में अनेक व्याख्यान भलीभांति बंधे एवं कसे रहते थे।[6]

फ्रेंच साहित्यिक न्यायाधीश मानतेन इस विधा के जन्मदाता माने जाते हैं। निबंध ही एकमात्र ऐसा साहित्य रूप है जिसके गोत्र, नाम और जन्मतिथि का हमें निश्चयपूर्वक बोध है। नाटक, प्रगीत, लघुकथा, उपन्यास आदि के मूलस्रोत धुंधले अतीत से घुलमिल जाते हैं। केवल निबंध ही एक ऐसा साहित्य रूप है जिसके सन्- संवत का लेखा-जोखा उपलब्ध है- जिसके पूर्व उसका अस्तित्व नहीं पाया जाता और जिसके पश्चात् उसका अस्तित्व अविनश्वररूप में रहता चला आया है।[7] कैसल्स इन्साइक्लोपीडिया और लिटरेचर में 'ऐसे' शीर्षक निबंध में यह टिप्पणी दी गई है-'किन्तु बेकन के समय से इस शब्द (ऐसे) का प्रयोग कुछ-कुछ भेदबोध रहित किया जाने लगा है। इसका उपयोग आज परस्पर एक दूसरे से भिन्न रूपों के लेखन के लिए किया गया मिलता है- गंभीर और विद्वतापूर्ण ग्रन्थ ट्रीटाइज से लेकर किसी क्षण द्वारा उद्वेलित क्षण स्थायी एवं हल्के भावोद्वेलन तक के लेखन इस शब्द से अभिहित किए जाते हैं।'

निबंध की परिभाषा :

निबंध के जन्मदाता मोनतेन ने अपने को ही अपने निबंधों का विषय बताया क्योंकि वह अपने को ही पूरी तरह जानता था ।[८] डा० जानसन की परिभाषा में भी अंग्रेजी निबंध को असंगठित अपूर्ण और अव्यवस्थित मन का विवरण कहा गया है । मानतेन आत्मकथातत्व को आवश्यक रूप से व्यक्तिवादी स्वीकार करते हैं परन्तु यह तो निबंध की एक विशेषता मात्र हुई, परिभाषा नहीं । प्रसिद्ध समीक्षक ओर्ले विलियम्स ने 'ऐसे' में साहित्यिक सौंदर्य का अंतर्भाव किया है । उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'दि ऐसे आर्ट एण्ड सीरिज' में लिखा है कि ऐसे छोटा होना चाहिए उसमें साहित्यिकता के साथ विचारों की वह आनन्दमयी स्थिति अनिवार्य है । आस्वर्न, नामक समीक्षक ने अपने विचार से ऐसे की एक छोटी परिभाषा दी है- ऐसे किसी भी विषय पर संलापमयी सरल रचना है । श्री एच० लाषन ने ऐसे की परिभाषा- 'इंगलिश एसेज' वार्षिक सीरिज में इस प्रकार दी है- 'साहित्यिक दार्शनिक या सामाजिक विषय पर ऐतिहासिक या वैयक्तिक दृष्टिकोण से लिखी हुई रचना ।'[९] सच्चा निबंध रहस्यालाप या प्रेम से किए हुए संलाप के समान होता है और सही मानों में जो निबंधकार होते हैं पाठकों से उनकी हितवार्ता चतुराई से भरी तथा प्रभावोत्पादक होती है निबंधकार एक-एक शब्द अपने हृदय के अंतरतम से बोलता है । उसका लेखन अन्तर्स्तल की आकुलता को व्यक्त करता है ।[१०] बेकन के अनुसार निबंध गद्य की वह छोटी एवं असम्पूर्ण रचना है जिसमें लेखक अपनी व्यक्तिगत भावनाओं, अनुभूतियों और विचारों का अंकन प्रत्यक्ष एवं निष्पक्ष रूप से सरल शैली में स्वतंत्रता से करता है । प्रीस्टले का कहना है कि सच्चे निबंधकार का कोई विषय नहीं होता या यदि आप चाहें ही तो जगत का हर विषय उसके अधिकार में होता है । उसका सहज कारण है कि उसका काम अपने को या किसी विषय से अपने सम्बंध को अभिव्यक्त करना होता है । सच्चा निबंध सहृद संलाप या अंतरंग वार्ता के निकट पड़ता है और निबंधकार वह दीप्तिमान और आत्माभिव्यंजन का कृतिकार है जिसका प्रत्यैक पद उसके व्यक्तित्व से लावण्ययुक्त रहता है ।[११] गार्डनर का कहना है कि निबंध में विषय तो विचारों को टांगने के लिए एक खूंटी भर है ।[१२]

एलैक्जेंडर स्मिथ का मत है कि साहित्यिक निबंध मुक्तक सदृश हैं । चूंकि यह भी किसी केन्द्रीय मन: स्थिति से ही निर्मित होता है । चाहे भाव वहक का हो, गंभीर हो या उपहास का ही क्यों न हो । मन: स्थिति के उपस्थित होते ही निबंध इस तरह उसके चतुर्दिक विकसित होने लगता है जैसे रेशम के कीड़े के चतुर्दिक कोंथा विकसित होता है ।[१३] बेन्सन ने निबंध पर ही एक निबंध लिखा है वह कहता है निबंध एक प्रकार का दिवास्वप्न या मानस की वह दशा है जिसमें आदमी कहता है- ' मैं अपने से कुछ कहता हूं । मैं कहता हूं ।[१४] निबंध के क्षेत्र में एक प्रकार से लूक्स को लैंब की आत्मा ही कहा जाता है । जो निबंधकार उन्हें आदर्श प्रतीत होते हैं, उनकी प्रशंसा वे इसलिए करते हैं कि उसका मानस शीशे के नीचे पड़े मधुमक्खियों के नीड़ के समान है- आप उसकी सारी क्रिया को देख सकते हैं । यहीं वह अपने हृदय को आस्तीन पर लिए फिरता है । लूक्स की दृष्टि में निबंध श्रेष्ठ वार्तालाप का एक दर्पण है ।[१५] सन् १९४८ में प्रकाशित ' ए बुक आफ इंग्लिश एसैज ' की भूमिका में डबल्यू ई० विलियम्स ने लिखा है कि यह गद्य रचना का एक प्रकार है जो बहुत छोटा होता है और जिसमें केवल वर्णन नहीं होते । कभी-कभी निबंधकार अपनी बात को सिद्ध करने के लिए प्रसंगों का आश्रय ले सकता है । कभी उपन्यासकार की भांति पात्र सृष्टि भी कर सकता है परन्तु उसका मूल उद्देश्य कथा करना नहीं है । निबंधकार का मुख्य कार्य सामाजिक, दार्शनिक, आलोचक या टिप्पणीकार जैसा होता है । एडीसिन के अनुसार- निबंध में विचारधारा तरल और मिश्रित होती है । उसका प्रवाह कभी साधारण उपदेशात्मकता की ओर उन्मुख रहता है, कभी वैयक्तिक आत्माभिव्यंजना की ओर ।[१६] सन् १९३३ के कोश में इस प्रकार परिभाषा दी है -' निबंध एक साधारण कलेवरमयी रचना है जिसमें किसी विषय या विषयांश पर विचार-विमर्श रहता है । आरंभ में इसमें अपरिपूर्णता का अभाव रहता था, परन्तु अब उसके प्रयोग से ऐसी रचना का बोध होता है जिसका विस्तार परिमित रहने पर भी शैली प्रौढ़ और परिष्कृत है ।[१७]

हिन्दी में भी अनेक विद्वानों ने निबंध की विविध परिभाषाएँ प्रस्तुत की है जो इस प्रकार है -

डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा के मतानुसार तर्क और पूर्णता का अधिक विचार न रखनेवाला गद्य रचना का वह प्रकार निबंध कहलाता है जिसमें किसी विषय अथवा विषयांश का लघु विस्तार में स्वच्छन्दता एवं आत्मीयता पूर्ण ढंग से ऐसा कथन हो कि उसमें लेखक का व्यक्तित्व झलक उठे।[१८] आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है- 'आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार- निबंध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तिगत विशेषता हो। शुक्ल जी ने निबंध को गंभीर विचार प्रकाशन ही माना है। उन्होंने कहा है कि यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्णशक्ति का विकास निबंधों में ही सबसे अधिक संभव होता है। इसीलिए गद्य शैली के विवेचक उदाहरणों के लिए अधिकतर निबंध ही चुना करते हैं।[१९] डा० गुलाबराय ने निबंध की विशेषताओं को लक्ष्य में रखकर निबंध की परिभाषा इस प्रकार की है-'निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और संबद्धता के साथ किया गया हो।[२०]

डा० लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय के अनुसार- निबंध लेखक - मत का प्रतिपादन नहीं करता। सिद्धान्त स्थिर नहीं करता वह मनोनीत विषय को अपने व्यक्तित्व के रस से पगाकर प्रकट करता है। वह विषय का अध्ययन करके नहीं लिखता वह पाठक के साथ आत्मीयता स्थापित करता है।[२१] भगीरथ मिश्र के मत से निबंध प्राय: वह गद्य रचना है जिसमें किसी विषय का श्रृंखलित विवेचन अथवा वैयक्तिक भाव या विचार-धारा का क्रमबद्ध रोचक प्रकाशन प्रस्तुत किया जाता है निबंध कहलाता है।[२२] निबंध में लेखक विशेष की मानसिक चेतनाजगत भावात्मक अनुभूति की अभिव्यक्ति होती है। उसमें एक निजीपन होता है, जिसमें लेखक सहज ही पाठक के साथ निकटता स्थापित कर लेता है। निबंध में लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है। अपने इस व्यक्तित्व के आधार पर लेखक अपने निबंध में अपने कथन में सबलता सशक्त आग्रह और प्रवाहशीलता उत्पन्न कर देता है।[२३] निबंध गद्य काव्य की वह विधा है जिसमें कि लेखक एक सीमित आकार में इस विविध रूप जगत के प्रति अपनी भावात्मक तथा विचारात्मक प्रतिक्रियाओं

को प्रकट करता है ।[२४] निबंध स्वाधीन चिंतन और निश्छल अनुभूतियों का सरस, सजीव और गद्यात्मक प्रकाशन है ।[२५] डा० श्रीकृष्णलाल के मत से भावों और विचारों की प्रधानता तथा शैली की रमणीयता के योग से जिस नवीन साहित्य का प्रचलन हुआ उसे निबंध साहित्य की संज्ञा दी गई । निबंध वह साहित्य रूप है जिसमें लेखक ने प्रतिपाद्य विषय के भीतर की अपनी रुचि, भावनाओं और विचारों की स्वच्छन्द अभिव्यक्ति की हो ।[२६] निबंध वह एक साहित्यिक और ललित गद्य रचना है- जिसमें लेखक किसी विचार या विषय से प्रभावित होकर अपनी भाषा में अपने भावों या विचारों की क्रिया तथा प्रतिक्रिया को ऐसे सजीव ढंग से व्यक्त करता हुआ पाठक की मनोवृत्तियों को सचेत करता है कि वह कुछ काल के लिए प्रभावित होता रहे या विचार करता रहे ।[२७]

बाबू श्यामसुंदरदास ने निबंध की परिभाषा करते हुए कहा है कि-`निबंध गद्य साहित्य की वह विधा है जिसमें लेखक किसी विषय का स्वच्छन्द मौलिक एवं आकर्षक विवेचन करता है । डा० प्रभाकर माचवे के अनुसार निबंध में आकर काव्य और गद्य के सर्वश्रेष्ठ पराग का एक प्रकार से सर्वोच्च संश्लेषण मिलता है । ---निबंध स्कैच नहीं है, संस्मरण नहीं है, पत्र नहीं है, गद्यकाव्य नहीं है, यात्रावर्णन नहीं है और यह सबकुछ न होकर भी इन सबका सार है ।उसमें सबके साथ किए हुए सहज संलाप का सा आनन्द भी है ।[२८] डा० सूर्यकान्त शास्त्री के अनुसार-`निबंध एक प्रकार का स्वागत भाषण है । स्वगतभाषण में पाठक के ध्यान को वश में रखना नितान्त कठिन होता है । एक निबंधकार के पास ऐसे साधन बहुत ही न्यून होते हैं जिनके द्वारा वह पाठक के मन को अपनी रचना में बांध सके । कहने के लिए उसके पास कहानी नहीं होती, जिसके द्वारा पाठक के मन में उत्सुकता बनाए रखे । गाने के लिए उसके पास स्वर-ताल तथा लय नहीं होते, जिनके द्वारा वह पाठक को मंत्रमुग्ध बनाये रखे ।[२९] वास्तविक निबंध वही होता है जिसमें लेखक किसी मन में उठे हुए भावात्मक विचार को दार्शनिक रूप से तत्व निरूपण की शैली से व्यक्त करे । साधारणत: निबंध वह साहित्य-रूप है जो न बहुत बडा हो, न बहुत छोटा हो । जो गद्यात्मक हो, जिसमें किसी विषय का अत्यन्त सरल चलता सा विवरण हो । विशेषत: उस विषय का वर्णन हो जिसका

स्वयं लेखक से सम्बंध हो । अनुभव और गंभीर ज्ञान का संक्षिप्त और लघु परिणाम निबंध है ।[30] डा० कृष्णलाल का मत है कि व्यक्तिप्रधान निबंध के दर्शन वहीं होते हैं जहां लेखक अपने प्रतिपाद्य विषय की चर्चा के भीतर ही अपने व्यक्तित्व की झलक दिखलाता चलता है । व्यक्तित्व की यह झलक अति स्पष्ट भी नहीं होती और यह बिलकुल अस्पष्ट रहे ऐसा भी नहीं होता ।

निबंध की परिभाषाएं इस तरह अनेक मिलती है और बहुत अंशों में वे परस्पर विरोधी दिखाई पड़ती है फिर भी उन सबके विश्लेषण से हम निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचे-ह पहुंचते हैं ।

(अ) निबंध व्यक्ति की चेतना का प्रतीक है, इसीलिये उसका मूल आत्म-प्रकाशन है । आत्म प्रकाशन के नाते आत्मीयता निबंध में अपेक्षित है ।

(ब) निबंध का आकार संक्षिप्त या सीमित होता है । संक्षिप्त का तात्पर्य है सुव्यवस्थित, संयमित और सुसंगठित शिल्पविधान ।

(क) निबंध के न तो विषय सीमित होते हैं न उसकी बंधी-बंधाई एक शैली है । निबंधकार की दृष्टि जगत और जीवन पर न तो दार्शनिक की दृष्टि होती है, न तो ऐतिहासिक,कवि, राजनीतिक या उपन्यास-कार की ।

संक्षेप में निबंध एक किसी सीमित स्व गद्य रचना है जिसमें कार्यकरण की श्रृंखला के साथ विचार निबद्ध होते हैं और उन विचारों में व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप होती है ।

निबंध के प्रकार :

निबंध के प्रकारों के सम्बंध में विद्वानों में बड़ा मतभेद है । वस्तु, शैली आदि के आधार पर विविध भेद किए गए हैं । फिर भी प्रधान रूप से विद्वानों ने दो भेद स्वीकार किए हैं ।

विषय प्रधान निबंध

विषयीप्रदान निबंध

विषय प्रधान(Objective) निबंध में किसी वस्तु या अन्य को निबंध का विषय बनाया जाता है। इसके प्राय: दो भेद किए जाते हैं -

(क) वर्णनात्मक (Descriptive)

(ख) विवरणात्मक(Narrative)

विषयी प्रधान(Subjective) इसमें स्वयं को ही निबंध की विषय सामग्री बनाया जाता है। इसके तीन भेद किए हैं -

(क) विचारात्मक(Reflective)

(ख) भावात्मक(Emotional)

(ग) आत्मपरक (Personal)

विषय प्रधान निबंधों में विषय की प्रधानता रहती है और विषयीप्रधान निबंधों में व्यक्तित्व की। विषय में तटस्थता भले बरती जाये पर शैली में व्यक्तित्व अलगाव असम्भव है। क्योंकि निबंध में एक ओर जहां विवेचन, तर्कपुष्ट, क्रमसंयुक्त, विवेक सम्वलित तथा विचारगर्भित होता है वहीं दूसरी ओर लेखक की शैलीगत प्रेषणीयता, संवेदनशीलता, भावोद्बोधकता आदि में उसके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट झलकती रहती है।

<u>वर्णनात्मक :</u>

जिसमें किसी वस्तु, दृश्य, स्थान आदि का वर्णन पाया जाय वह वर्णनात्मक निबंध होता है। इसमें विशेष रूप से प्राकृतिक वस्तुओं, नदी, पहाड़, वृक्ष, जंगल, दृश्य, त्योहार, रहन-सहन, वेशभूषा, यात्रा, मौसम, सभा-सम्मेलन, तीर्थ स्थान, मेले-तमाशे, आदि का वर्णन रहता है। वर्णनात्मक निबंधों में विषय का तटस्थ तथा निर्लिप्त भाव से वर्णन करना ही लेखक का प्रमुख उद्देश्य रहता है। जगत के बाह्य सौंदर्य तथा प्रकृति के मनोरम दृश्यों तथा व्यापारों के वर्णन करने में उसकी प्रवृत्ति अधिक रमती है। मनुष्य द्वारा निर्मित अथवा किसी भी प्राकृतिक वस्तु के विषय में ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान तथा उसके अपने अनुभव वर्णन कार्य में उसके विशेष सहायक होते हैं। वर्णनात्मक निबंधों में -

मस्तिष्क अथवा तर्क से अधिक काम न लेकर नेत्रेन्द्रिय तथा कल्पना का ही अधिक सहारा लिया जाता है। उसमें वर्णन दो प्रकार का होता है- एक स्थूल और दूसरा सूक्ष्म। स्थूल वर्णन में लेखक वर्ण्यवस्तु को जिस रूप में देखता है उसका उसी प्रकार वर्णन करता है। इसमें कल्पना का सहारा न लेकर यथातथ्य वर्णन की ओर ही लेखक की रुचि अधिक होती है। पर सूक्ष्म वर्णन में लेखक कल्पना के स्वर्ण पंखों पर बैठकर वर्ण्यविषय का ऐसा हृदयग्राही तथा चित्त को चमत्कृत कर देने वाला वर्णन करता है जो पाठक को भी कल्पना-लोक का प्राणी बना देता है। सूक्ष्म वर्णन में पाठक की कल्पनाशक्ति के विकास के साथ-साथ उसके हृदय को अभिभूत कर देनेवाली भावना भी निहित रहती है। विशेषता यह है कि इसमें नदी का वेग, समुद्र का लहराता चित्र, सद्यस्नाता रमणी, फटेहाल दीन-गरीबनी बुढिया, लाठी टेकता हुआ अंधा बुढ्ढा, फन उठाए हुए सांप, नाचता हुआ बंदर आदि का ऐसा चलता -फिरता चित्र शब्द चित्रों और वर्णनों के द्वारा आंखों के सामने लाया जाता है कि हम थोड़ी देर के लिए आत्मविभोर हो जाते हैं। ऐसा लगता है कि वह वस्तु सामने है। इस प्रकार के निबंधों में तथ्य के साथ ही कल्पना तत्व की भी प्रधानता रहती है। लेखक की दृष्टि ऐसी पैनी ~~बक~~ होनी चाहिए कि वह उसके अन्तस्थल में पैठकर उसे आद्योपांत देख सके। यदि उसका स्वाभाविक वर्णन नहीं हुआ तो उसमें सजीवता कदापि न आ सकेगी। इसमें भावना और रागात्मक तत्वों के साथ बुद्धि तत्व का मिश्रण होता है। इसमें लेखक पाठक के हृदय में, दृष्टि में उस वस्तु को इस प्रकार प्रस्तुत करना चाहता है जिस प्रकार शिक्षक शिष्य के मस्तिष्क में किसी बात को नाना-प्रकार ~~के~~ से समझा-बुझाकर स्पष्ट करना चाहता है। बालकृष्ण भट्ट, ठाकुर जगमोहन सिंह, माधवप्रसाद मिश्र, कृष्ण ~~बब~~ बलदेव वर्मा, बख्शी जी, गुलाबराय, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', महादेवी वर्मा आदि ने ऐसे निबंध लिखे हैं।

<u>विवरणात्मक :</u>

जिसमें किसी ऐतिहासिक घटना, कथा या वृतान्त का विस्तृत वर्णन रहे वह विवरणात्मक निबंध कहलाता है। यह कालगत होता है। इसमें गतिमान तथ्यों के वर्णन व विवरण मिलते हैं। इनमें ऐतिहासिकता, पौराणिकता व सामाजिकता के तत्व बराबर

मिलेंगे। इनकी श्रृंखला अंत तक विश्रृंखल नहीं होती। पाठक उसी सूत्र में अन्त तक चला जाता है। यात्रा, उत्सव, पर्वतारोहण, महापुरुषों की जीवनी युद्ध आदि के विवरण अवसर मिलते हैं। इनमें कल्पनातत्व की भी प्रधानता रहती है पर अनुभूति एवं तथ्यों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। लेखक तटस्थ रहकर विवरण प्रस्तुत करता है। परन्तु उसमें लेखक की आत्मीयता आवश्यक है। निबंधकार उसमें रागात्मकता का संस्पर्श और कथात्मक शैली का आश्रय लेता है, ताकि पाठक नीरस न हो। विवरणात्मक निबंध में कथा की प्रधानता होती है, क्योंकि उसमें घटनाओं के क्रमिक वर्णन तथा विवेचन को प्रमुख स्थान दिया जाता है। इतिहासकार घटनाओं का व्यौरा तटस्थ होकर करता है उसमें किसी काल में बीती हुई कथाओं, घटनाओं, युद्धों, यात्राओं, सम्मेलनों, राजाओं के शासन की परंपरा का क्रम से उल्लेख करता है। यही कार्य इतिहास-कार का भी है। परन्तु दोनों में कार्यक्षेत्र तथा रचना पद्धति का स्पष्ट अन्तर है। इतिहासकार घटनाओं का व्यौरा तटस्थ होकर देता है, वह अपने व्यक्तित्व को घटनाओं के से पूर्णरूपेण उठाये रहता है। विवरणात्मक निबंध में कल्पना तथा भाव की प्रधानता और विचार की गौणता रहती है। इतिहासकार की दृष्टि बाह्य अभिव्यक्ति की ओर होती है और विवरणात्मक निबंधकार की दृष्टि आन्तर अभिव्यक्ति की ओर होती है। इतिहास में कल्पना का उपयोग नहीं होता, जबकि विवरणात्मक निबंध में कल्पना तथा भाव दोनों की अपेक्षा होती है। वर्णनात्मक तथा विवरणात्मक निबंधों में प्रमुख अन्तर यह है कि प्रथम में निबंधकार साहित्य के उपादानों के सहारे एक चित्र खींचने का प्रयत्न करता है और इस प्रकार वह चित्रकार के निकट पहुंच जाता है। परंतु द्वितीय में एक घटनाक्रम को क्रम से पाठकों के सामने रखना चाहता है- और इस प्रकार वह चित्र को स्थिर रूप में उपस्थित न कर उसे गतिशील रूप प्रदान करता है। वर्णन और विवरण दो भिन्न वस्तुएं हैं।

वर्णन जड़ अथवा चेतना, प्राकृतिक अथवा मनुष्य निर्मित किसी भी वस्तु अथवा पदार्थ का होता है। वर्ण्य वस्तु से उसका गहरा सम्बंध रहता है, परन्तु विवरण में घटनाओं के क्रमिक उल्लेख को ही अधिक महत्व दिया जाता है। दूसरे शब्दों में वर्णन

का अधिक सम्बंध देश से रहता है तो विवरण का काल से।? दूसरे शब्दों में स्पष्ट रूप से यों कहा जा सकता है कि वर्णनात्मक निबंध एक कुशल चित्रकार के सुंदर चित्र के समान है, जिसको देखकर स्वयं दर्शक मंत्रमुग्ध सा रह जाता है तथा वह उस कुशल चित्रकार की भांति ही उसमें आनंदविभोर हो उठता है। जबकि विवरणात्मक निबंध एक चारु-चलचित्र के समान है जो कि पाठक के सम्मुख गतिशील रूप में प्रस्तुत होता है। विवरणात्मक निबंध वर्णनात्मक निबंधों की अपेक्षा अधिक चैतन्यमय होते हैं। ये निबंध जीवनी,कथायें, घटनाएं, पुरातत्व, अन्वेषण, आखेट, इतिहास आदि विषयों को लेकर लिखे जाते हैं। इन निबंधों में व्यास व प्रसाद शैली की प्रधानता रहती है लेकिन उसमें सरलता अपेक्षित है। तारतम्य इन निबंधों का प्रमुख गुण है। महावीर प्रसाद द्विवेदी, शिवपूजन सहाय, बख्शी जी, श्री राम शर्मा आदि इसी प्रकार के निबंधकार हैं।

विचारात्मक :

इन निबंधों में वैचारिकता की प्रमुखता होती है। इस प्रकार के निबंधों के लिए गंभीर अध्ययन, मनन, चिंतन व अनुभव की प्राय: आवश्यकता होती है। इनमें तार्किकता का प्राधान्य एवं बुद्धितत्व की प्रमुखता होती है। आध्यात्मिक , दार्शनिक, साहित्यिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, समस्यामूलक आदि विषयों पर अच्छे निबंध लिखे गए हैं। इसमें कुछ तत्वों व सिद्धान्तों के आधार पर विचारों को व्यक्त किया जाता है। वैज्ञानिकता का सहारा लेना पड़ता है। तर्क के साथ भावना व अनुभूति का मिश्रण रहता है। इस प्रकार के निबंधों में बात की बारीकी, तर्कों की योजना विवेचना के ढंग के अच्छे उदाहरण मिलते हैं। विचारों में तारतम्य आवश्यक रहता है, अन्यथा उसमें आकर्षण न रहेगा। विश्रृंखलित होने से पाठक की जिज्ञासु चेतना को स्थिर नहीं रह पाती। अत: विचारों का गठन व कसाव बहुत आवश्यक है। इसीलिए शुक्ल जी ने शुद्ध विचारात्मक निबंधों का उत्कर्ष वहीं माना था, जहां एक-एक पैराग्राफ में विचार दबाकर कसे गए थे, और एक-एक वाक्य किसी सम्बंध विचार खंड को लिए हो।[३१] विचारों का प्रवाह टूटना नहीं चाहिए। एक के बाद एक वे ऐसे संश्लिष्ट एवं सम्बद्ध हो कि अन्त तक पाठक उसे पढ़ता चला जाय उसका अंतिम निष्कर्ष तर्कपूर्ण हो। कम

से कम शब्दों में अधिक से अधिक विचार व विषय सामग्री होनी चाहिए। पं० विश्वनाथ-प्रसाद मिश्र के अनुसार जिन निबंधों में बुद्धि व हृदय का समान योग हो वे ही शुद्ध विचारात्मक निबंध कहे जा सकते हैं। ऐसे ही निबंध शुद्ध साहित्यिक निबंध होते हैं।[३२] विचारात्मक निबंधों की एक प्रमुख विशेषता है भाषा सम्बंधी शुद्धता तथा उसकी अभिव्यंजनाशक्ति को विकसित करना। विचारात्मक निबंधों में अर्थ गंभीरता तथा सूक्ष्म विचारों की बहुलता के साथ-साथ भाषा भी अपेक्षाकृत अधिक गंभीर, व्याकरण समान तथा व्यावहारिक होती है। इसके अतिरिक्त इन निबंधों में भावों तथा विचारों की व्याख्या होती है जिससे भाषा की अभिव्यंजना शक्ति भी विकसित होती है। यद्यपि इन निबंधों में विचारतत्व की ही प्रधानता रहती है परंतु रागात्मक तत्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

इस प्रकार के निबंधकारों में महावीरप्रसाद द्विवेदी, लक्ष्मीधर बाजपेयी, मिश्रबन्धु, हरिभाऊ उपाध्याय, आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, जैनेन्द्र, वासुदेवशरण अग्रवाल, इलाचन्द्र जोशी आदि हैं।

भावात्मक :

भावात्मक निबंध हृदय की वस्तु है। उसमें भावों की प्रधानता रहती है, बुद्धितत्व गौण होता है। रागात्मक तत्वों की प्रमुखता के कारण संपूर्ण निबंध उससे प्रभावित रहता है। अन्तरानुभूतियों, तीव्र भावों तथा भावुकता का सच्चा चित्रण इन निबंधों में मिलता है। हार्दिक सुख-दुःख, आनन्द विलास, अच्छा-बुरा, आकर्षण-विकर्षण, ममत्व-आक्रोश का स्पष्ट चित्रण इन निबंधों में होता है। स्वभाव, प्रकृति, मनोविकार, सुख-दुःखात्मक स्थितियों की प्रतिक्रियात्मक व्यंजना आदि से सम्बंधित निबंध इसी प्रकार के होते हैं। इन निबंधों में कई बार गद्य काव्य का सा आनन्द मिलता है। निष्कपटता, निश्छलता इनके मुख्य लक्षण है। संगीत की सी प्रभावान्विति में भावों का ऐसा अंकन रहता है कि वे ही भाव पाठक के हृदय में भी जागृत कर देते हैं। उसे रसमय बना देते हैं। भावात्मक निबंध का लेखक अपनी भावुकतापूर्ण, मर्मस्पर्शी, सजीव

भाषा शैली और भावानुकूल उसके उतार-चढ़ाव की सहायता से पाठक को पर्याप्त प्रभावित करता है । लेखक की अनुभूति तन्मयता उसके रागात्मक कथन को प्रभावशाली बनाती है और उसकी सत्यता पर बल देती है । निबंधकार अपनी भावानुभूतियों से संचालित होता है । भावात्मक निबंधों में बुद्धि की अपेक्षा रागवृत्ति की प्रधानता रहती है जिस प्रकार विचारात्मक निबंधों का सम्बंध मस्तिष्क से है । उसी प्रकार भावात्मक निबंधों का सीधा सम्बंध हृदय से है । भारतेन्दु युग में भावात्मक निबंधों की रचना प्राचीन पद्धति के आधार पर हुई । भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र भावात्मक निबंधों के भी सूत्रधार माने जाते हैं । भारतेन्दु जी ने तथा उनके समकालीन निबंधकारों ने भावात्मक निबंध ही अधिक लिखे । भावात्मक निबंधों के अंतर्गत गद्य काव्य, गद्य गीत, वैयक्तिक निबंध, संस्मरण, हास्य व्यंग्यात्मक निबंध, श्रृंगारिक प्रकथन आदि का समावेश किया जाता है । इसमें विचारों की अपेक्षा भावों का अधिक प्राधान्य रहता है । लेखक के मस्तिष्क की अपेक्षा व्यक्तित्व का अधिक प्राधान्य रहता है । इस वर्ग के निबंधों में लेखक का उद्देश्य भावोद्रेक तथा रस संचार करना होता है । अत: वह विषय से सम्बंधित तथ्यों का विवेचन भावोद्गारों के प्रवाह में बहता हुआ तथा विषयान्तर करता हुआ भावुकतापूर्ण एवं काव्यात्मक शैली में करता है । इस वर्ग के निबंधकारों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र , बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, माधवप्रसाद मिश्र, सरदार पूर्णसिंह, वियोगी हरि इनके अधिकतर निबंध इसी श्रेणी के हैं ।

<u>आत्मपरक :</u>

जिसे अंग्रेजी में पर्सनल ऐसे कहते हैं उसे हिन्दी में आत्मपरक या व्यक्तिवादी निबंध कहते हैं । निबंध का यह प्रकार सजग, प्राणवान और बलिष्ठ होता है । यद्यपि भावात्मक और विचारात्मक निबंधों में भी निबंधकार अपने `व्यक्तित्व` को रखता है परंतु यह पूर्णरूपेण उसमें समाविष्ट नहीं हो पाता । व्यक्तिवादी निबंधों में निबंधकार को स्वयं सामने जाना पड़ता है । स्वयं को विषय सामग्री बनाना पडता है । उसमें निज को मिला देना पडता है । इस प्रकार के निबंधों में अनेक बार लेखक अपने जीवन के

प्रत्यक्ष अनुभवों के साथ ही जीवन की अनेक घटनाओं, चित्रों को इस प्रकार समाविष्ट करता है कि उसका व्यक्तित्व प्रधान आत्म तत्व सामान्य होकर भी अलग बना रहता है । इन निबंधों में अनेक बार ऐसे ही प्रसंग अथवा नितांत वैयक्तिक बातें निबंधकार द्वारा प्रस्तुत की जाती है । उसकी आत्मीयता, उसका जीवन खंड जीवन की दृष्टि ही इन निबंधों का विषय बनता है । इसमें अपनत्व की इतनी गहरी चमचमाती रेखा खींची जाती है कि न तो वह मिटती है और न दूसरों से मिलकर छिपती है । अपनी विशेषताओं के कारण पाठक को दूर से ही दिख जाती है । उसमें 'व्यक्ति' से सम्बंधित सभी भाव, तत्व, आनन्द, विषाद, गुण-अवगुण, विचार-विवेचन मिल जायेंगे । सांसारिक प्रेम-घृणा, मित्र-शत्रु, कटु-मधुर आदि ~~इनसबके~~ सामग्री बातों के सजीव चित्र मिल जावेंगे जिन्हें देखकर पढ़कर पाठक मुग्ध हो जायेंगे ।

व्यक्तिवादी निबंधों के लिए व्यवस्थित रूपों की आवश्यकता नहीं होती, कलम उठाई और कहीं से विषय का प्रारंभ कर दिया और कहीं भी लाकर छोड़ दिया। उसमें क्रम, व्यवस्था, वर्गीकरण आदि का प्राय: अभाव रहता है । लेखक धाराप्रवाह लिखता चला जाता है । ~~उसमें व्यक्ति से सम्बंधित सभी भाव, तत्व, आनन्द, विषाद, गुण-अवगुण, विचार-विवेचन मिल जायेंगे~~ मन की चंचल लहरियां जिस प्रकार लहरायेंगी लेखनी भी उन्हीं हिलोरों की झकोरों के साथ चलती रहेगी । विषय कोई हो एवरेस्ट की चोटी या सांप की बाबी, अथवा उद्‌जन बम विस्फोट का मानवता के लिए संकट या खटमलों और मच्छरों के कारण रात का जागरण, पाठक की रुचि तो लेखक की प्रतिक्रिया, उस प्रतिक्रिया के प्रकाशन में उसकी वचनभंगिमा, उसकी संपूर्ण अभिव्यक्ति की मार्मिकता- संक्षेप में उसके व्यक्तित्व के प्रकाशन में होती है । व्यक्तिवादी निबंधकार की सफलता इसी पर निर्भर रहती है कि वह अधिक से अधिक अपने निबंध में की आत्मीयता बनावे । इन निबंधों में विवेचना और आलोचना की जगह व्यंग्य-विनोद, हास्य, उक्ति-वैचित्र्य, मनोरंजन, आत्मीयता रंजकता की अधिकता रहती है । व्यक्तिवादी निबंधों की लघुता उत्सुकतावर्द्धक होती है । लेखक जिस बात को उचित समझता है उसे स्वच्छन्दता-पूर्वक अभिव्यक्त करता है । वह विषय और सिद्धान्त के झमेले में नहीं पड़ता । इस श्रेणी का निबंधकार समस्त सांसारिक वस्तुओं, विषयों, एवं सिद्धान्तों को अपने दृष्टि-कोण से देखता है । अपनी तुला से तौलता है । इनमें विषय को महत्ता न देकर

व्यक्तित्व का ही महत्व होता है। व्यक्तित्व से सम्बंधित होने के कारण मनोवैज्ञानिकता का पुट आवश्यक है। गद्य रुचिकर एवं भावपूर्ण होता है। व्यंग्य भी रहता है। उसकी अपनी अलग धारणा होती है उसी धारणा के अनुसार वह अपने भावों को प्रस्तुत करता है।

ललित निबंध की परिभाषा :

आचार्य बाजपेयी जी के मतानुसार अंग्रेजी साहित्य में वैयक्तिक निबंध एक प्रकार की गद्यमयी व्यक्तिप्रधान रचना है जो मन की दिप्त या भावानुकूल दशा में निर्मित होती है। अत: इसमें लेखक का मन तरंगों में लहराता है। निजी उमंगों में विहार करता है। मनतरंग समाप्त होने पर निबंध समाप्त हो जाता है। वैयक्तिक निबंधकार किसी घटना, परिस्थिति, वस्तु, व्यक्ति आदि पर निबंध लिखते हुए अपने मन की प्रतिक्रिया, प्रभाव, अरुचि, आदि वैयक्तिक विशेषताओं को ही अधिक कहता है। उनके वस्तुगत सौन्दर्य का निरूपण उसमें गौण हो जाता है।[33] श्री जयनाथ नलिन के अनुसार गठित शिल्प शैली से सम्पन्न जो रचयिता के अहं को सशक्त और स्पष्ट अभिव्यक्ति दे जिसमें उसकी निश्चल अनाभिभूत भावनाओं और मौलिक चिन्तन पद्धति का प्रकाशन हो वह व्यक्तिवादी या वैयक्तिक निबंध कहे जायेंगे। समाज, धर्म, दर्शन या साहित्य पर शास्त्रीय पुस्तकीय पांडित्य प्रदर्शन नहीं, निजी दृष्टिकोण पूर्ण चिन्तन यही विचारात्मक व्यक्तिवादी और वैयक्तिक निबंध कहलाते हैं। इस व्यक्तिवादी निबंध का तीसरा प्रकार भी है आत्मपरक-इसमें निज या निज परिधि में आनेवाले व्यक्तियों या घटनाओं से सम्बद्ध या प्रेरित-उद्वेजित और अद्भुत मनोविकारों या विचारों का प्रकाशन रहता है।[34] श्री नलिन जी ने इस परिभाषा में व्यक्तिवादी निबंधों के तीन भेदों को जैसे कि विचारात्मक व्यक्तिवादी, भावात्मक व्यक्तिवादी और आत्मपरक को लेकर वैयक्तिक निबंधों को परिभाषित किया है। इन तीनों के विवेचित तत्व यहां पर मिलेंगे जिसे हम व्यक्तिवादी निबंध की संज्ञा देते हैं। इन तीनों में आत्मीयता, निजता और व्यक्ति की प्रधानता है। डा० विजयेन्द्र स्नातक के कथनानुसार- मैं व्यक्तिवादी निबंध की कोटि में उन निबंधों को स्थान देता हूं जिनमें किसी तथ्य या तत्व की स्थापना लिये व्यक्तिगत सुख-दु:ख, रुचि-अरुचि, त्याग-ग्रहण के साथ

वैयक्तिक भावनाओं, अनुभूतियों, मान्यताओं, और घटनाओं को प्रमुख रूप से स्थान मिलता है। अपने जीवन का राग-विराग, कुण्ठा-विषाद आदि की अनुभूतियों को प्रश्रय देकर जहां निबंध का ताना-बाना बुना जाना है वे निबंध मेरी दृष्टि में निश्चय ही व्यक्तिप्रधान कहे जाने चाहिए।[३५] डा० सत्येन्द्र के मतानुसार व्यक्तित्व प्रधान निबंधों के सम्बंध में यह बात आज निश्चित सी मान ली गई है कि यह आत्माभिव्यक्ति का ही साधन है। अत: चाहे कोई विषय हो, विषय की शाखा हो इसमें व्यक्तिपरकता-`पर्सनल टच` अवश्य होना चाहिए। जिस प्रकार गीतियों में(   ) लेखक का व्यक्तित्व शीघ्र पकड़ में आ जाता है उसी प्रकार निबंध में व्यक्तिगत स्पर्श अवश्य रहनी चाहिए।[३६] आज के निबंधों में व्यक्तिगत विशेषता का अर्थ लेखक के दृष्टिकोण की स्वतंत्रता समझी जाती है, शैली की स्वच्छता तथा व्यक्तिगत सौन्दर्य ही आज के निबंधों की मुख्य विशेषताएं हैं। डा० बलवंत लक्ष्मण कोतगिरे का मत है कि निबंध एक वह साहित्यिक और ललित गद्य रचना है जिसमें लेखक किसी विचार या विषय से प्रभावित होकर अपनी भाषा में अपने भावों या विचारों की क्रिया तथा प्रतिक्रिया को ऐसे सजीव ढंग से व्यक्त करता हुआ पाठक की मनोवृत्तियों को सचेत करता है कि वह कुछ काल के लिए प्रभावित होता रहे या विचार करता रहे।[३७] डा० गुलाबराय जी के अनुसार इस प्रकार की विधा का विषय व्यक्ति ही होता है। ये निबंध प्राय: भावात्मक होता है क्योंकि संस्मरणों के सहारे कुछ भावधारा भी जुड़ी रहती है। ये आत्मकथात्मक होते हैं, पर आत्मकथा नहीं होते। इनमें निबंधों का निजीपन और उनकी सी स्वच्छन्दता रहती है। वैसे सभी निबंधों में वैयक्तिक सुख-दु:ख, कठिनाइयों,सफलता, असफलताओं की भावभूमि को स्पर्श करते चलते हैं।[३८] डा० विनयमोहन शर्मा के मतानुसार व्यक्तिवादी निबंध अंग्रेजी का `पर्सनल ऐसे ` का हिन्दी अनुवाद है। इसमें लेखक हलकी-फुलकी भाषा में सामान्य विषयों पर अपने अनुभवों को प्रस्तुत करता है।[३९]

चूंकि निबंध कोई प्रत्यय या धारणा नहीं, बल्कि एक सतत परिवर्तित और कालांतर में विकसित साहित्यिक विधा है। इसीलिए परिभाषा की सांगोपांगता और व्याप्ति तनिक दुष्कर कार्य है। फिर भी हम इस दिशा में प्रयास करेंगे, हमारी परिभाषा

के अनुसार-सुसंस्कृत और रुचिकर वार्ता के स्वर और पद्धति पर, किसी वस्तु या विषय से अपने संचारी सम्बंध की आह्लादिनी अभिव्यक्ति और अन्विति को ललित निबंध कहते हैं।

<u>ललित निबंध का स्वरूप :</u>

वस्तुत: निबंध चाहे वह वियगत हो या व्यक्तिगत, आधुनिक चेतना का सप्राण प्रतिनिधि है। उसमें बौद्धिकता और भावुकता दोनों के दर्शन होते हैं। विषयगत निबंधों में बौद्धिकता का उत्कर्ष रहता है और भावुकतापूर्ण निबंध मूलत: व्यक्तिगत निबंध होते हैं। परंतु सच तो यह है कि निबंध को किसी भी सीमा या परिभाषा में नहीं बाधा जा सकता। उसका वैविध्य ही उसकी विशेषता भी बन गया है।

विषयगत निबंधों को ही ले तो उनके भीतर विषय की ही दृष्टि से सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, और सांस्कृतिक आदि अनेक विभाजन मिलते हैं। साहित्यिक निबंध भी विषयगत निबंधों के अंतर्गत आते हैं, परन्तु उनके भी कई वर्ग किए जा सकते हैं जैसे- समीक्षात्मक, विवेचनात्मक आदि। समीक्षात्मक निबंध की दो कोटियां तो स्पष्ट ही है सैद्धांतिक एवं ~~व्यवहर्क-~~ व्यावहारिक। अभिव्यंजना या शैली की दृष्टि से हम निबंधों को वर्णनात्मक, आख्यात्मक, व्याख्यात्मक एवं विचारात्मक कोटियों में रख सकते हैं और इन तीन उपलब्धियों के आधार पर उसकी तीन श्रेणियां की जा सकती है। ऊपर के विभाजन से यह स्पष्ट है कि निबंध का विषयगत रूप वस्तु और शिल्प दोनों की दृष्टि में कितना विकसित है। 'विषयीप्रधान' जिसकी पद्धति आसक्तमयी शैली है। कृतिकार की स्वच्छन्द, उन्मुक्त, रागात्मक वृत्ति का इसमें पूर्ण विवरण होता है। इसी प्रकार के निबंधों को जे बी प्रिस्टले ने मानसतरंग 'कहा है। बिना किसी पूर्व नियोजित योजना के कहीं से बात उठा ली जाती है और फिर बात से बात फूट जाती है। इस तरह बात-बात में बात बन जाती है। इसमें निबंधकार को अनुभूति की संवेदनशीलता एवं उसका प्रभाव मुख्य होता है न कि विषय। इन ललित निबंधों में लेखक स्वयं प्रकट होता है एवं अपने कौशल से पाठक से सहृदयतापूर्वक

तादात्म्य स्थापित कर बात का प्रतिस्थापन एवं प्रतिपादन करता है। विषय कुछ भी हो परन्तु लेखक की निजता उसे मनोरम बना देती है। यही बात, ललित या व्यक्तिगत निबंध के सम्बंध में भी कही जा सकती है। चंद्रकांता मणि की तरह ललित निबंधों की काव्य विधा पिघलती हुई मानों क्षीण हो गई है। इसके बजते हुए भाषा छंद वेणुगीति (लिरिक)गद्य गीत तथा अल्प(फिक्सन) से चलकर निकले थे और पुनः उनमें ही लीन होते जा रहे हैं। यह ललित निबंध अंतर्मुखी भावदशा की देन हैं। ललित निबंधकार एक आलोचक नहीं, गल्पात्मक नायक होता है। ललित निबंधकार का अनुभव धरातल `मैं`,`तुम`,`वह` को पारस रूप कर देता है। इसलिये उसकी अंतर्मुखता और गोपनीयता कम वैयक्ति होकर भी आश्वसी समूहगत हो जाती है। ललित निबंधकार के कई अर्जन है जिनमें ललित रचना की क्षमता, सहृदयता, और रागात्मक अभिरुचि सर्वप्रधान है।

कवि, नाटककार और उपन्यासकार की तरह ललित निबंधकार भी एक विशिष्ट कलाकार है, जिसमें लालित्य की मूमिश्र होती है। वह न तो कवि की भांति रस को लक्ष्य कर पाता है, न गद्यकार की भांति घटनाक्रम। `प्लाट` का सूत्र पिरो पाता है, और न ही गद्य गीतकार की तरह शुद्ध संवेदन में रहस्यात्मकता में मुग्ध हो जाता है। उसके सामने वह तथ्यात्मक गद्य होता है, जिसमें उसे विचारों और अनुभूतियों दोनों को ही ललित बनाना पड़ता है। उसके सम्मुख कोई कथा नहीं होती बल्कि कुछ बिन्दुओं वाला एक विषय होता है- वह भी अनिश्चिता उसे अंतर्लीन होकर स्वयं आत्मव्यंजना नहीं करनी पड़ती बल्कि एक ऐसे फिरसा-फहम पाठकवृंद तक पहुंचना होता है जो मात्र संवेदनशील धरातल पर होता है। वह परोक्ष आश्रय होता है और पाठक एक परोक्ष आलंबन। उसके ललित निबंध मानों वे पत्र होते हैं जिन्हें पाठक व्यक्तिगतरूप से पढता तो है किन्तु उत्तर नहीं देते क्योंकि ललित निबंध स्वयं उनके उत्तर में भी रूपान्तरित हो जाते हैं। इसलिए ललित निबंधकार की सृजन प्रक्रिया में अनुभूति और अभिव्यक्ति के क्षण बहुधा एक साथ एवं समानांतर चलते हैं। ललित निबंध की रचना प्रक्रिया बहुत कुछ वेणुगीतों की रचना प्रक्रिया से मिलती-जुलती है। लेकिन यहां गद्य कवि

का माध्यम लेना पड़ता है, जिसका वाक्य विन्यास मूलत: इतिवृत्तात्मक होता है। प्रतीकात्मक एवं बिंबमूलक कम। यद्यपि निबंधकार की बुद्धि और मान दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, एवं अपेक्षाकृत एक-दूसरे की न्यूनाधिक मात्रा ही विषयप्रधान एवं विषयीप्रधान की संज्ञा प्रदान करती है। फिर भी विषयीप्रदान की रचना, शैली, का कोई निश्चित स्वरूप नहीं निर्धारित किया जा सकता है और दूसरी बात यह कि उसका गद्य मनोहारी और आकर्षक होना चाहिए। व्यक्तित्व की अनुभूति अपनी समस्त रुचिरता इस रचना शैली को दीप्त करती चले।'[४०]

हिन्दी का व्यक्तित्व शब्द अंगरेजी 'पर्सनैलिटी' का पर्यायवाची है। साहित्य में व्यक्तित्व का विचार रचना में प्रकट साहित्यकार के चरित्र के संदर्भ में होता है। व्यक्ति की मनोवृत्ति, संस्कार, सिद्धान्त, आचार-विचार, बुद्धि, व्यवहार आदि बातें भी व्यक्ति तत्व के साथ घनिष्ट संबंध रखती है। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व की परिभाषाएं अपनी-अपनी दृष्टि से की है, परन्तु इन सभी परिभाषाओं में पर्याप्त अंतर है। व्यक्तित्व किसी व्यक्ति की उन विशेषताओं का संघात है जो उसे दूसरे व्यक्ति से पृथक कर देता है।[४१] प्रा० जी डबल्यू आलपोर्ट ने विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रयुक्त परिभाषाओं एवं व्याख्याओं का अध्ययन कर अपनी व्याख्या प्रस्तुत की है, व्यक्तित्व व्यक्ति में मनोदैहिक अवस्थाओं का वह गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ उसके पूर्व अभियोजन का निर्धारण करता है। व्यक्तित्व का ही व्यक्तित्व होता है, अत: व्यक्ति के बिना व्यक्तित्व बन ही नहीं सकता। व्यक्तित्व विहीन व्यक्ति की कल्पना ही निरर्थक है। हिन्दी साहित्यकोश के अनुसार जीवन में मूल्यों का सम्बंध व्यक्तित्व से लेना है जो मूल्यों की खोज करती है और उन्हें आत्मसात करती है।[४२] उसमें अन्यत्र लिखा है-'व्यक्ति के परिचय में दो चीजें सम्मिलित हैं- एक तो उनकी निजी आस्थायें और दूसरी उसकी वैयक्तिक दृष्टियों से संलग्न उसकी निजी मर्यादाएं। आचार्य हजारीप्रसाद जी के मतानुसार देखें तो निबंधों के व्यक्तिगत होने का मतलब यह नहीं है कि उनमें विचार श्रृंखल न हो। संसार में हम जो कुछ देखते हैं वह दृष्टा की

विभिन्नता के कारण नानाभाव से प्रकट होता है। प्रत्येक व्यक्ति यदि ईमानदारी से अपने विचारों को व्यक्त कर ले तो हमें नवीन का परिचयमूलक आनंद मिल सकता है, और साथ ही उद्देश्य की सिद्धि भी हो सकती है जो साहित्य का चरम प्रतिपाद्य है।

व्यक्तिवादी निबंधकार की सफलता इसी पर निर्भर रहती है कि वह अधिक से अधिक अपने निबंध को आत्मीय बनावे। इन निबंधों में विवेचना और आलोचना की जगह व्यंग्य विनोद, हास्य ,व्यक्ति-वैचित्र्य, मनोरंजन, आत्मीयता, रंजकता की अधिकता रहती है। व्यक्तिवादी निबंधों की लघुता उत्सुकतावर्द्धक होती है। लेखक जिस बात को उचित समझता है उसे स्वच्छन्दतापूर्वक अभिव्यक्त करता है। वह विषय और सिद्धान्त के झमेले में नहीं पड़ता बल्कि अपेक्षा करता है कि उसका प्रतिपादन एवं निरूपण ठीक है। अतः दूसरों को भी उसी का समर्थन करना चाहिए। इस श्रेणी का निबंधकार समस्त सांसारिक वस्तुओं, विषयों एवं सिद्धान्तों को अपने दृष्टिकोण से देखता है। अपनी तुला से तौलता है। इसमें लेखक की सारी विचारधारा अपने व्यक्तित्व प्रकाशन की ओर लगी रहती है।---निबंध रचना लेखक की अपनी व्यक्तिगत भावना से सम्बंधित है।[४३] इसमें विषय को महत्ता न देकर व्यक्तित्व का ही महत्व होता है। इसमें निबंधकार कोई विशेष बात या नया सिद्धान्त किसी पाठक पर थोपना नहीं चाहता, वरन् अपनी ही स्थिति सामने रखता है। उसमें लेखक की निजी क्रियाएं, प्रतिक्रियाएं रहती है। इतना ही नहीं व्यक्तित्व के से सम्बंधित होने के कारण मनोवैज्ञानिकता का पुट आवश्यक है। गद्य रुचिकर एवं भावपूर्ण रहता है। इसमें व्यंग्य भी रहता है। उसकी अपनी अलग धारणा होती है उसी धारणा के अनुसार वह अपने भावों को प्रस्तुत करता है। निबंधकार निबंध में अपने व्यक्तिगत विचारों के चित्रण के लिए प्रस्तुत विषय से हटकर कभी-कभी विषयांतर अवश्य करता है। पर यह विषयांतर या असंबद्धता ऐसी नहीं होगी कि अभीष्ट विषय एकदम पीछे छूट जाय और विषयांतर ही विषयोत्तर दृष्टिगत हो। विषयांतर इनका प्रधान लक्ष्य नहीं रहता अपने व्यक्तित्व की छाप लगाने के लिए निबंधकार विषयांतर संक्षिप्त और यथाप्रसंग ही करता है। इसके अतिरिक्त निबंध का विषय तुच्छ से तुच्छ भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त

क्योंकि निबंधकार का लक्ष्य तो आत्म प्रदर्शन होता है, विषय पर तो उसकी दृष्टि बहुत ही कम रहती है।

'आत्माभिव्यंजन' को भी जान लेना उचित होगा। कृतिकार अनुभूत वस्तु को सर्वप्रथम आत्मसात करता है परंतु उस पुनर्वितरित का पिछला कलेवर बदल चुका होता है और अब नवीन स्वरूप में प्रस्तुत होता है। यद्यपि कृतिकार अपनी सर्जना में कुछ ऐसे उपादानों का समावेश कर चुका होता है जिसके आधार पर उसे 'अपनेपन' का विशेषण दे सकता है। परन्तु जाने या अनजाने उस परंपरा वातावरण एवं गृहीता की सुरुचि से अनुबंध करना ही होता है। कृति पर कृतिकार की छाप ही दूसरे शब्दों में उसकी शैली है जो कभी भी दो लेखकों को नहीं मिली। इस प्रकार कृतिकार अपने मीठे कडुए घूंटों के द्वारा सर्जना में कुछ ऐसे उपादानों का समावेश कर चुका होता है जिसके आधार पर उसे अपनेपन का विशेषण दे सकता है। परंतु जाने या अनजाने उस परंपरा, वातावरण एवं गृहीता की सुरुचि से अनुबंध करना ही होता है, कृति पर कृतिकार की छाप ही दूसरे शब्दों में उसकी शैली है जो कभी दो लेखकों की नहीं मिलती। इस प्रकार कृतिकार अपने मीठे कडुए घूंटों को सर्जना में तंतुवाय की भांति अपनी निजता को बुन देता है। फिर हमारी सुपरिचित दृष्टि उसे ही परखकर यह बता देती है कि यह कृति अमुक लेखक की है, इस रूप में लेखक अपने को अभिव्यंजित कर पाता है। इस तरह मैत्री सुलभ, सहानुभूतिपूर्ण तथा भावनामय आत्माभिव्यंजन के कारण ही निबंध को विशिष्ट साहित्यिक व्यक्तित्व प्राप्त हो सका है।

<u>ललित निबंध के प्रकार :</u>

ललित निबंधों की निम्नलिखित श्रेणियां बनाई जा सकती हैं-

(क) <u>प्राथमिक भावतात्विक ललित निबंध :</u>

वैयक्तिक निबंध, भावक्रीडापरक निबंध, चारु लेख, गद्यगीतात्मक निबंध आदि।

(ख) <u>द्वितीयक भावतात्विक ललित निबंध :</u>

ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, विचारात्मक आदि भूमिकापरक ललित निबंध।

(ग) गत्यात्मक ललित निबंध :

रेखाचित्रपरक, कथात्मक, संस्मरणात्मक, जीवनमूलक,घटनात्मक आदि ।

(घ) मिश्रित ललित निबंध :

क + ख और (ग) के संयोग से युक्त ।

(ड०) निलेख :

प्राथमिक भावतात्विक ललित निबंध :

हम ललित निबंध पहले मूल प्रभेदों के अंतर्गत वैयक्तिक निबंध, भाव विलासपरक निबंध, चारु लेख, और गद्य-गीतात्मक निबंधों को ले सकते हैं । इन्हें हम प्राथमिक भावतात्विक (थीमैटिक) ललित निबंध कहेंगे । क्योंकि इनमें कोई न कोई विचार वस्तु (थीम) अथवा कोई न कोई कथात्मक भाव ही प्रधानत: हुआ करता है । विरासतरूप में हिन्दी में नव्य ललित निबंधों को एक देदीप्यमान परंपरा मिली । भारतेन्दु ने ललित निबंध की नाटकीय शैली को ग्रहण करके हास्य,व्यंग्य तथा समाज संस्कृति को उपजीव्य बनाया । बालकृष्ण भट्ट ने बाणभट्ट की अलंकृत गद्यधारा में गद्यगीतात्मक भावात्मक निबंध लिखे । हिंदी में ललित निबंधकारों के राजकुमार हिंदी के चार्ल्सलैम्ब, सरदार पूर्णसिंह थे जिन्होंने गद्यगीत जैसे लिखित प्राथमिक भावतात्विक निबंध लिखे हैं । उन्होंने मानववाद की भूमिका पर नैतिकता, सौन्दर्य और सत्य का समन्वय किया था । वैयक्तिक निबंधों को मानववादी आधार देकर उन्होंने इस विधा का रूपान्तर कर डाला । हजारीप्रसाद द्विवेदी ने पूर्णसिंह की परंपरा को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक फलक दिया । 'मेरी जन्मभूमि', एक कुत्ता एक मैना', 'शिरीष के फूल,' वसन्त आ गया' आदि उनके प्रधानत: प्राथमिक भावतात्विक ललित निबंध हैं । रामवृक्ष बेनीपुरी, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', तथा रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि के ललित निबंधों के सामान्य विशिष्ट लक्षण हैं । ये सभी अपने गत्यात्मक ललित निबंधों को कभी रेखाचित्र, कभी संस्मरण, कभी कथा की विधियों में पिरोते हैं, कभी भावक्रीडापरक प्राथमिक भावतात्विक ललित निबंध

रचते हैं । जब वे निलेखों में व्यंजनात्मक आलोचना का समावेश हो जाता है, तब वे खिल उठते हैं । बहुधा चिंतक और सहृदय के द्वारा लिखे गए `निलेख` में मौलिकता का वर्गीकरण अनुभूति की मादकता और अभिव्यक्ति का लावण्य हमें वैसा ही सौंदर्य बोध देता है जो प्राथमिक भावनात्विक ललित निबंध श्रेणी के चारु लेख प्रदान करते हैं । सामाजिक चुनौतियों का कठोरता, सामूहिकता, जीवन की जटिलता और कृत्रिमता की प्रधानता के कारण `चारु लेख` बहुत ही कम लिखे जाते हैं ।

द्वितीयक -भावनात्विक ललित निबंध :

द्वितीयक भावतात्विक निबंधों की श्रेणी में निबंधकार चिंतनशीलता को अधिक स्थान देने लगता है । यह चिन्तनशीलता तर्क के माध्यम से नहीं, सहृदयता के द्वारा उद्‌भासित होती है । इस चिंतनशीलता में निबंधकार का बहुश्रुत ज्ञान और गहरी अनुभूति का आधार होता है । इस तरह ललित निबंधकार अपने ज्ञान का ललित उपयोग और अपनी अनुभूति का सुविचारित संयोग भी कर सकता है । इस स्थिति में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और विचारात्मक लेख भी ललित निबंधों के लालित्य तत्व से परिपक्व हो जाते हैं । हजारीप्रसाद द्विवेदी ने ललित निबंधों में रसात्मकता एवं ऐतिहासिक चेतना का परिपाक किया । इन प्रमुख निबंधकारों के अलावा बदरीनारायण चौधरी `प्रेमघन`, बालमुकुन्द गुप्त, महावीरप्रसाद द्विवेदी, माधवप्रसाद मिश्र, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, शांतिप्रिय द्विवेदी आदि का भी अपना -अपना विशिष्ट योगदान है । `पुरानी पोथियां` `अशोक के फूल,` आम फिर बौरा गये`, `वर्षा घनपति से -घनश्याम तक`, `कुटज आदि द्वितीयक भावतात्विक ललित निबंध हैं इनमें भी प्राथमिक एवं द्वितीयक श्रेणियां घुल-मिल गई हैं । रवीन्द्रनाथ का प्रत्येक भावतात्विक ललित निबंध बहुधा प्रकृति के किसी शालीन वृक्ष, किसी टटके फूल, किसी कवि समय या किसी कथानक रूढ़ि से शुरू होकर कलात्मक संस्कृति के रंगमंच पर थिरकता चला जाता है । इसमें भावतात्विक ललित निबंधों को एक ओर तो आत्मोद्‌घाटन वाली शैली में तथा दूसरी ओर कल्पित पाठक से उन रहस्यों को बतानेवाली खुली गोपनीयता की मस्ती में पेश किया गया है । संस्कृति और इतिहास का अपना सुन्दर मेल कराने की धारा में विद्यानिवास मिश्र

के भी वर्चस्वी हस्ताक्षर हुए हैं । स्वयं उनकी ही उक्ति है कि `छितवन की छांह` में मादकता है । `कदम की फूली डाल` में विंध्यप्रवास का फल है। तुम चन्दन हम पानी` में सांस्कृतिक अन्वेषण ही उपलब्धि है तथा `आंगन का पंछी और वनजारा मन` में गृह मोह तथा बुद्धिजीवी की एकांतिकता की दुविधा के क्षण हैं । `आंगन का पंछी` में गौरैया के प्रतीकीकरण के द्वारा घर की मधुरता एवं सुरक्षा का मीठा समुपरंजन है । तो `आम्रमंजरी` संपूर्ण भारतीय संस्कृति के प्रवाह में महक उठी है । बैचिराजी गांव में ग्रामीण शोभा और कृषक संस्कृति के वैभव के `कंट्रास्ट` में लोक संस्कृति के उद्धारकर्ताओं के दंभ के प्रति व्यथा की अभिव्यंजना हुई है । उनके संग्रहों में `आम्रमंजरी` जैसे अनेक ललित निबंध हैं । जिनकी विषय प्रतिपादन पद्धति में काफी अन्तर है । `हर सिंगार`, `वसंत`, चन्द्रमा मनसो जात:, आदि ऐसे ही हैं ।वस्तुत: विद्यानिवास मिश्र में संस्कृत साहित्य की पौराणिक तथा अर्वाचीन दोनों ही ढंग की चेतना का संतुलन है, उनमें ग्रामीण सौन्दर्यबोध और शहरी बौद्धिक चिंतन की समानांतरता है । हास्य तथा गुस्सा दोनों का सहअस्तित्व है । रामवृक्ष बेनीपुरी, कन्हैयालाल मिश्र `प्रभाकर` तथा रामधारी `दिनकर` आदि कभी भावक्रीडापरक प्राथमिक भावतात्विक ललित निबंध रचते हैं तो कभी सामाजिक द्वितीयक श्रेणी के `ललित निबंध` रचते हैं । ~~तने-कभि-सनमननिक-द्वितनिय~~ `वंदे वाणी विनायकौ` में भी इसी तरह के प्राथमिक एवं द्वितीयक भावतात्विक ललित निबंध हैं ।

गत्यात्मक ललित निबंध :

भावतात्विक ललित निबंधों की दूसरी श्रेणी गत्यात्मक ललित निबंधों की है। बहुधा इनमें कथा, रेखाचित्र, जीवनी, संस्मरण, घटना, आदि का तिलतंदुल न्याय से संयोग होता है । एक ओर इन तत्वों का समावेश ललित निबंधों को अन्यतम ~~करनलक है-+~~ वैयक्तिक बनाता है, तो दूसरी ओर इनमें कथा के `स्वर` का आभास कराता है । इन निबंधों में निबंधकार का गत्यात्मक या परोक्ष नायकत्व ~~भलने~~ झलकने लगता है और

पाठक एक उद्दीपन विभाव का सहभोक्ता हो जाता है । इनमें कल्पित पाठक की उपस्थिति का बोध भी बहुत मुखर हो उठता है । इस श्रेणी में ललित निबंधों में वे भेद आते हैं जो `रेखाचित्र परक`, कथात्मक, संस्मरणात्मक, घटनात्मक आदि होते हैं । पद्मसिंह शर्मा ने ललित निबंध में व्यक्तिगत संस्मरणों तथा भावावेश का कमनीय समावेश किया और स्पष्ट रूप से अपने व्यक्तित्व के साथ-साथ जीवनी की भी उद्भावना की, सरदारपूर्णसिंह ने ललित निबंधों को पूर्णतः `लिरिकल` एवं मानवतावादी मूल्यों से चित्र चिंतन संयुक्त कर दिया । मृत्युंजय रवीन्द्रनाथ नामक पुस्तक में हजारीप्रसाद द्विवेदी ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर गल्पात्मक ललित निबंध लिखे हैं । अक सर उनके ललित निबंधों में प्रकृति आलंबन है, उनमें रोमांटिक रागात्मकता के प्रति आसक्ति है । गुप्त साहचर्यों की बाढ़ है तथा लेखक का मन बार-बार प्राचीनकाल में कुंभ टिकाच्छनी आकाश में दूर तक उड़ जाना चाहता है । इन निबंधों में अनेक अनुच्छेदों में उन्होंने प्राचीन भारतीय साधना पद्धतियों, साहित्यिक सूत्रों, मिथक या परंपराओं को पूरी तरह समझकर सर्जनः अभिव्यक्त किया है ।

श्री विद्यानिवास मिश्र की समानांतरता में भगवतशरण उपाध्याय के गल्पात्मक निबंध ध्यातव्य है, जिनमें उन्होंने भारत के नगरों की आत्मकथा के माध्यम से देश का सांस्कृतिक इतिहास लिखा है । उनके यात्रा संस्मरणों में भी गल्पात्मक ललित निबंध की विधा है । गल्पात्मक ललित निबंधों की श्रेणी में महादेवी वर्मा और रामवृक्ष बेनीपुरी के भी अनेक रेखाचित्र हैं । क्योंकि वे मूलतः विवरणात्मक भावुकता तथा प्रभावपरक शैली में होते हैं । राहुल सांकृत्यायन ने घुमक्कडशास्त्र` तथा अपनी यात्रों के विवरण में संस्मरण और रेखाचित्र का अनूठा सामंजस्य किया है । देवेन्द्र सत्यार्थी ने `रेखाएं बोल उठी` शीर्षक संग्रह में जो गल्पात्मक ललित निबंध लिखे हैं, उनमें एक अनूठा प्रयोग है । लेखक ने अंतरराष्ट्रीय साहित्य और संस्कृति की लोकतात्विक जन्मभूमि प्रस्तुत की है । गुरुदयाल मल्लिक ने संस्मरणों और जीवनमूलक गल्पात्मक ललित निबंधों को `दिल की बात` में संग्रहीत किया है । वे सूफी रंग में रंगे हैं उनमें रोमांसपूर्ण किस्सागोई की क्षमता

है । रवीन्द्र की वैष्णवभावना उनकी सांस्कृतिक दृष्टि है उनके संस्मरणा निबंध महत मानवता के कुछ ~~घटनाक्रम-का-क्षर्ण~~ घटनात्मक क्षणों या महान व्यक्तियों के चरित्र के किसी कोण का गल्पांतरण कर देते हैं । जब समाज ने मुझे बागी बना दिया', 'मैं नई दिल्ली गया और रोया', गांधी जी के साथ एक प्रात:काल,' शिल्पी गुरु अवनींद्रनाथ,' 'शांतिनिकेतन', के-शिल्पगुरु', श्री नंदलाल बसु' आदि ऐसे ही संस्मरणात्मक चारु लेख है । गुलाबराय की एक पुस्तक'मेरी असफलताएं' में जीवनी मूलक संस्मरणों की सांद्र वैयक्तिकता है, किन्तु वे ललित शैलीकार न होकर प्रधानत: पत्रकार जैसे हैं । रामवृक्ष बेनीपुरी ने भी विरोधाभास पूर्ण शैली में लालित्यपूर्ण चमत्कार का संधान किया है । 'माटी की मूरतें' में संस्मरणात्मक एवं जीवनी मूलक रेखाचित्र जैसे ललित निबंध हैं । बेनीपुरी ने अपने निबंधों में एकालाप शैली का भी मौलिक कौशल हांसिल किया है । कन्हैयालाल मिश्र'प्रभाकर' के निबंधों में सामाजिक चेतना और व्यावहारिक जीवन के अनुभवों की प्रखरता है । स्केच की चित्रात्मकता, संस्मरण की आत्मीयता तथा शैली का चारु चमत्कार ये तीनों तत्व उनके निबंधों के प्राण हैं ।

ललित निबंधों को मात्र हास्यप्रधान बनाकर कलात्मक प्रभविष्णुता आद्यंत बरकरार नहीं रखी जा सकती । फिर भी शुद्ध हास्यपूर्ण ललित निबंध मिलते हैं । ये अनिवार्यत: कथांशो, चुटकुलों आदि से भरपूर है । केशवचंद्र वर्मा ने'प्यासा और बेपानी के लोग' शीर्षक संग्रह में 'मजाक का नतीजा', भूगोल शास्त्री मुनि कालिदास', कलाकार अ और चूल्हा' जैसे हास्यप्रधान गल्पात्मक निबंध रचे हैं । इन्द्रनाथ मदान ने अपने 'सुगम तथा शास्त्रीय संगीत' शीर्षक संग्रह में कुछ निबंध 'झूठ बोलना भी एक कला है','मिले तो पछताए मान, प्रणय निवेदन की वस्तु, ऐसे ही रचे हैं ।

मिश्रित ललित निबंध :

मिश्रित निबंधों की तीसरी श्रेणी भावतात्विक एवं गल्पात्मक श्रेणियों के मेल से बनती है । बहुधा ललित निबंध शुद्धरूप में कम ही मिलते हैं, प्रत्युत इनमें इन दोनों

श्रेणियों का अंतरावलंबन ही रहता है । अनेक कलाविदों ने अनौपचारिक निबंधों को ही ललित निबंध माना है और औपचारिक निबंधों को लेख, औपचारिक निबंधों में अर्थात् लेखों में तीन विशेषताएं मानी गई हैं - औपचारिकता, बहिर्मुखता, एवं बौद्धिकता में अभिरुचि और अनौपचारिक निबंधों अर्थात् ललित निबंधों की विशेषताएं हैं । अनौपचारिकता, अंतर्मुखता एवं कल्पना में अभिरुचि श्री द्विवेदी जी के चिंतात्मक निबंधों अर्थात् मिश्रित ललित निबंधों साहित्य का मर्म, पुरानी पोथियां, हमारी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली, आदि में स्थापनाओं की अपेक्षाकृत कम चिंता हुई है ।

हिंदी में गल्पात्मक ललित निबंधों के बाद मिश्रित ललित निबंधों की ही भरमार मिलती है । मिश्रित ललित निबंधों में सहज गंभीरता और सरस भावुकता का विचार-वस्तु एवं गल्पात्मकता का मेल होता है । इनमें से किसी एक की प्रचुरता अथवा दूसरे की कमी निबंधकार के व्यक्तित्व का सूक्ष्म अनावरण भी करती है । हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध, नामवर सिंह के `बलकमखुद` शीर्षक संग्रह के कुछ निबंध, इन्द्रनाथ मदान के `कहीं न जाए` केवल आलोचनार्थों जैसे निबंध, भुवनेश्वरनाथ मिश्र `माधव`, देवेन्द्रनाथ शर्मा तथा वासुदेवशरण अग्रवाल के अनेकानेक निबंध संग्रहों में इस पद्धति का समाहार हुआ है । वासुदेवशरण अग्रवाल के निबंध बहुधा प्रभावात्मक आलोचना का छोर छू लेते हैं । इन्द्रनाथ मदान, भगवतशरण उपाध्याय तथा देवेन्द्र शर्मा के कतिपय मिश्रित ललित निबंधों में व्यक्तिगत जीवन की ~~नि~~ निजता को, जीवन दृष्टियों को, अनुभव तथा अध्ययन को अनूठा रागात्मक उपचार मिला है । भावातात्विक तथा मिश्रित निबंधों के कुछ उदाहरण शांति मेहरोत्रा तथा अजितकुमार आदि के कृतित्व ग्रंथों में भी मिल जाते हैं । रामेश्वरनाथ तिवारी के खजूर के पेड़` नामक संग्रह में कुछ हास्य-व्यंग्य मिश्रित लेख हैं । संसारचन्द्र ने भी हास्य एवं विनोदपूर्ण लेखों को `सटक सीताराम` में संग्रहीत किया है । प्रभाकर माचवे के `खरगोश के सींग` शीर्षक संग्रह के निबंधों के हास्य-व्यंग्य भी द्रष्टव्य हैं ।

निर्लेख :

हम लक्ष्मणरेखा खींचकर ज्ञान और भावना का द्वन्द्व नहीं बांध सकते हैं । यहां

भी अंतर्संधान होता है और हम निबंधों में लेख के तत्वों का प्रवेश पाते जाते हैं। यहां ललित निबंधों की चौथी श्रेणी बनती है। `निलेख`। निलेख में एक ओर विचारों का निर्बन्ध साहचर्य होता है और दूसरी ओर बौद्धिकता का तर्कपूर्ण अनुशासन। निलेख आखिर औपचारिक निबंध के तत्वों का भी पुट लिये हुए है। अंत में ललित निबंध की सभी श्रेणियों की सर्वोपरिता शर्त एक ही रह जाती है- औपचारिक अथवा अनौपचारिक-विषयवस्तु की ललित सर्जना के साथ-साथ और उसमें अंतर्निहित होकर निबंधकार के व्यक्तित्व का पूर्णकान्त संयोग, राहुल देवराज उपाध्याय, शिलीमुख, ललिताप्रसाद सुकुल। विनयमोहन शर्मा, रामविलास शर्मा। (विरामचिन्ह वाले) आचार्य ड०वर्धछिवणधेवव नलिन विलोचन शर्मा, धर्मवीर भारती, (मानवमूल्य और साहित्य) आदि इस धारा के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। वासुदेवशरण अग्रवाल, भगवतशरण उपाध्याय और हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का यथेष्ट साहित्य भी इसमें समाहित हो जाता है। लगभग सभी भावप्रवण `सहृदय आलोचक` निलेख बखूबी लिख व लेते हैं और लिखते हैं। राहुल जी के साहित्यिक निबंध विशेषरूप से (सरहैया तथा लोककवि बिसराम) पर लिखे इस कोटि के हैं। आचार्य नलिन विलोचन शर्मा के `जैनेन्द्र और प्रेमचन्द्र` शीर्षक निलेख में चिंतन और संवेदना का अद्वितीय योगायोग हुआ है। देवराज उपाध्याय ने अपने निलेखों में हास्य,उर्दू-हिन्दी पदों के उद्धरणों और कथात्मक दृष्टांतों द्वारा कोरमकोर साधारणीकरण की महती सिद्धि प्राप्त की है। `रामविलास शर्मा ने तीन लोक से मथुरा न्यारी`, नामकरण`अतिथि आदि निलेखों में राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याओं की तेजस्विता को दीप्त किया है। धर्मवीर भारती के हाथीदांत की भारतीय मीनारें, अंतरात्मा के ध्वंसावशेष जैसे निलेखों में एक साथ कवि की गद्य गीतात्मकता, अंतर्मुखी संवेदना और सांस्कृतिक चिंता की त्रिधारा मिलती है। ललिताप्रसाद सुकुल में आकर निलेख अपना अपेक्षाकृत सही समतोलन व ढूंढ लेता है। जब निलेखों में सर्जनात्मक आलोचना का समावेश हो जाता है, तब वे खिल उठते हैं बहुधा चिंतक और सहृदय के द्वारा लिखे गये `निलेख` में मौलिकता का वशीकरण, अनुभूति की मादकता और अभिव्यक्ति का लावण्य हमें वैसा ही सौन्दर्यबोध देता है जो प्राथमिक भावतात्त्विक ललित निबंध श्रेणी के चारु लेख प्रदान करते हैं।

--

सन्दर्भ- ग्रन्थ

१- निबंध संग्रह(भूमिका), आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

२- साहित्य का साथी- डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृ० १३३

३- हिंदी साहित्य का इतिहास- डा० नगेन्द्र पृ० ५६५

४- आन दि एक्सरसाइज आफ जजमेंट इन लिटरेचर-डबल्यू बेसिल वर्सफोल्ड,पृ०६०

५- अंग्रेजी संस्कृत कोश-श्री वामन शिवराम आप्टे,पृ०४६५

६- हिंदी के वैयक्तिक निबंध,श्री वल्लभ शुक्ल-पृ० ६

७- साहित्य संदेश अगस्त १६६१,पृ०१२३

८- विलियम हैनरी हडसन- एन इंट्रोडक्शन टु दी स्टडी आफ लिटरेचर,पृ०४४२

९- बेकन एसेज-प्रो०एन एस टकाकव,पृ०५४(भूमिका से)

१०- जे वी प्रिस्टले-हिंदी साहित्य का वृहद इतिहास त्रयोदश भाग,पृ०५६ से उद्धृत ।

११- निबंध सिद्धांत और प्रयोग-डा० हरिहरनाथ द्विवेदी,पृ०३२ से उद्धृत ।

१२- -वही- पृ०३३

१३- वही- पृ० ३४ से उद्धृत

१४- -वही- पृ० ३७ से उद्धृत ।

१५- वही- पृ० ३५ से उद्धृत ।

१६- ऐन इन्ट्रोडक्शन टु दि स्टडी आफ लिटरेचर-विलियम हैनरी,पृ०४४२

१७- दि आक्सफर्ड इंग्लिश डिक्शनरी-भाग-३ पृ० २६३

१८- आदर्श निबंध, डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा, पृ० ६

१९- हिंदी साहित्य का इतिहास-पृ० ६०५

२०- काव्य के रूप- पृ० २२१

२१- हिंदी गद्य की प्रवृत्तियां-(भूमिका) पृ० १८

२२- हिंदी साहित्य में निबंध और निबंधकार-डा० गंगाप्रसाद गुप्त पृ० ६ से उद्धृत ।

२३- हिंदी के गद्यकार और उनकी शैलियां-डा० राजगोपालसिंह चौहान, पृ० ५६

२४- हिंदी साहित्य में निबंध और निबंधकार-डा० गंगाप्रसाद गुप्त,पृ०८

२५- हिंदी निबंधकार-श्री जयनाथ नलिन,पृ०१०

२६- हिंदी निबंधों का शैलीगत अध्ययन-डा० मु०ब०शहा,पृ०२१

२७- हिंदी गद्य के विविध साहित्यरूपों का उद्भव और विकास-डा० बलवंत लक्ष्मण कोनमिरे-पृ०२५३

२८- हिंदी निबंध-प्रभाकर माचवे-पृ०८८-८६

२६- द्विवेदीयुगीन निबंध साहित्य-गंगावख्शसिंह, पृ० ६ ७

३०- समीक्षाशास्त्र-आचार्य सीताराम चतुर्वेदी-पृ०६७२-६७३

३१- हिंदी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल-पृ०४६७

३२- वांगमय विमर्श-विश्वनाथप्रसाद मिश्र-पृ०७१

३३- निबंध निर्णय-आचार्य नंददुलारे वाजपेयी,प्राक्कथन-पृ०१०-११

३४- जयनाथ नलिन के दिनांक ३-१२-५६ के व्यक्तिगत पत्र से ।

३५- हिंदी साहित्य में निबंध और निबंधकार-गंगाप्रसाद गुप्त, पृ० २०

३६- साहित्य और सिद्धांत-डा० सत्येन्द्र, पृ० २०८

३७- निबंध सिद्धांत और प्रयोग- डा० हरिहरनाथ द्विवेदी, पृ० ४३

३८- हिंदी साहित्य में निबंध और निबंधकार-गंगाप्रसाद गुप्त पृ० २१

३६- -वही- पृ० २१

४०- गद्य संकलन की प्रस्तावना-पंडित करुणापति त्रिपाठी-पृ०१०

४१- डिक्शनरी आफ वर्ल्ड लिटरेचर-जे टी राप्ले-पृ०३०५

४२- हिंदी साहित्य कोश- धीरेन्द्र वर्मा- पृ० ७४३

४३- हिंदी निबंध- डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा- पृ० ११-१२

000000
0000
00